International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 27-04-2019; Accepted: 29-05-2019
www.hindijournal.com
Volume 5; Issue 4; July 2019; Page No. 54-55

स्त्रियों की आर्थिक आत्मनिर्भरता: प्रेमचंद की दृष्टि

डॉ. प्रकाश कुमार अग्रवाल

प्राध्यापक, हिंदी विभाग, खड़गपुर कॉलेज, पश्चिम बंगाल, भारत।

प्रस्तावना

प्रेमचंद युग में नारी की दशा अत्यंत दीन थी। इसकी मुख्य वजह उसकी आर्थिक पराधीनता ही थी ।पारिवारिक संपत्ति में स्त्री की हिस्सेदारी ना होना उसकी सबसे बड़ी विवशता थी ।प्रेमचंद का निधन 1936 ईसवी में हुआ। 1937 ईसवी में हिंदू स्त्री सांपत्तिक अधिकार अधिनियम के अनुसार मृत व्यक्ति की विधवा तथा पूर्व मृत पुत्र की विधवा को संपत्ति में हिस्सा मिला। फिर भी आर्थिक दृष्टि से हिंदू नारियां पुरुषों पर ही निर्भर थी। अशिक्षा के कारण उनमें आत्मविश्वास की कमी थी। वे रूढ़ियों एवं परंपराओं से जकड़ी हुई थी ।उनका जीवन अत्यंत विवशता से भरा हुआ था। उच्च वर्ण की स्त्रियां, ईसाई पादरी नारियां उच्च शिक्षा प्राप्त कर आध्यापिका, डॉक्टर, वकील आदि बनकर अर्थ- उपार्जन करने लगी। विधवाओं, सेवासदनों में नारियों को आत्मनिर्भर बनाने हेतु व्यावसायिक प्रशिक्षण दिए जाने लगे। गांधीजी ने बुनाई, कताई और गृह उद्योगों द्वारा नारियों को आत्म निर्भरता का मार्ग सुझाया ।कुछ नारियां पत्र-पत्रिकाओं में लेख, कहानियां, कविताएं लिखकर कुछ उपार्जन कर लेती थी।

प्रेमचंद ने प्रतिज्ञा, वरदान, गबन और गोदान आदि उपन्यासों में नारियों को आत्मनिर्भर दिखाया है। 'वरदान' की सुवामा, 'गबन' की जग्गू, 'गोदान' की मालती आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर नारियां हैं। प्रेमचंद नारी की विवशता के लिए आर्थिक पराधीनता को दोषी मानते हैं। प्रतिज्ञा की 'सुमित्रा' के माध्यम से उन्होंने कहा भी है "बेचारी औरत कमा नहीं सकती,इसलिए उसकी यह दुर्गति है… ।"[1]

'प्रतिज्ञा' की सुमित्रा उच्च मध्यवर्गीय नारी का प्रतिनिधित्व करती है। प्रेमचंद ने सुमित्रा के चरित्र को शक्तिशाली बनाने का प्रयत्न किया है। उसके विचार एवं व्यवहार अन्य नारी पात्रों से भिन्न है। "वह एक खंडित व्यक्तित्व है। उसके यौन और अहंकार - दोनों ही बहुत अधिक उच्च हैं। वह गुड़िया बनकर पति के साए में रहती है, किंतु बोलती ऐसे हैं जैसे सिंह दहाड़ रहा हो।"[2]

सुमित्रा के पिता लखपति है वह सुमित्रा के हाथ खर्च के लिए हर माह 50 रुपये भेजते हैं ।सुमित्रा को इस बात का गर्व है कि वह पति की कमाई नहीं खाती है। वह पति से संतुष्ट नहीं है पति के साथ जब उसका विवाद होता है, तो उसका पति सुमित्रा को मायके जाने को कहता है। सुमित्रा तुनक जाती है एवं अधिकार भरे स्वर में कहती है "बाप का घर जब था,अब यही है। मैं अदालत से लड़कर रुपये 500 महीने ले लूंगी लाला, इस फेर में ना रहना। पैर की जूती नहीं हूँ,नई थी तो पहना, पुरानी हो गई तो उतारकर फेंक दिया।"[3]

प्रेमचंद की यह मान्यता थी कि परिवार एवं समाज में स्त्री की दुर्दशा का मुख्य कारण है आर्थिक पराधीनता। आर्थिक रूप से स्वतंत्र होने पर स्त्रियां अत्यंत खुश रहती हैं। 'सेवा सदन' में सुमन के पति खुश होकर जब पूरा वेतन उसके हाथ में रख देते हैं तो सुमन अत्यंत खुश होती है उसकी प्रसन्नता को व्यक्त करते हुए लेखक ने लिखा है "सुमन को आज स्वच्छंदता का आनंद प्राप्त हुआ। अब उसे एक-एक पैसे के लिए किसी के आगे हाथ ना फैलाना पड़ेगा। वह रुपए को चाहे जैसे खर्च कर सकती है, जो चाहे खा -पी भी सकती है।"[4] 'कर्मभूमि' की सुखदा अपने पति के साथ जब अलग रहने लगती है तब आय के लिए जज साहब की पत्नी की सिफारिश से बालिका विद्यालय में 50 रुपये की नौकरी करने लगती है। 'कायाकल्प' की अहिल्या अपनी प्रतिभा के बल पर समाचार पत्र -पत्रिका में लेख लिखकर एक 100 रुपए कमा लेती है। वहीं दूसरी ओर कायाकल्प की 'वागीश्वरी' पति की मृत्यु के पश्चात घोर आर्थिक कष्ट में जीवन गुजारती है। किन्तु किसी का एहसान लेना नहीं चाहती।

शिक्षा और स्वावलंबन नारी मुक्ति का प्रमुख आधार है। "19वीं शताब्दी के सांस्कृतिक और सामाजिक जागरण की लहर ने नारियों में जागृति की चेतना उत्पन्न कर दी थी। आर्य समाज, प्रार्थना समाज, ब्रह्म समाज की स्थापना से नारी शिक्षा के प्रति लोगों की रुचि बढ़ी थी और नारियां जीविकोपार्जन हेतु घर की चहारदीवारी लाँघने के लिए आगे बढ़ी थी ।इस काल तक कौटुंबिक आर्थिक व्यवस्था में नारी की निर्णायक भागीदारी नहीं होती थी। सामाजिक वैचारिक क्रांति,शिक्षा के प्रसार एवं बढ़ती महंगाई के फल स्वरुप नारियां आर्थिक रूप से आत्मनिर्भरता की ओर कदम बढ़ाने लगी थी।"[5]

प्रेमचंद के उपन्यासों में आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर नारियों को तीन श्रेणियों में बांटा जा सकता है यथा-

1. उच्च वर्ग की नारी - इसके अंतर्गत 'प्रेमाश्रम' की गायत्री एवं 'कर्म भूमि' की रेणुका को लिया जा सकता है।
2. मध्यवर्ग की नारी - इसके अंतर्गत 'गोदान' की मालती को रखा जा सकता है।
3. निम्न वर्ग की नारी- इसके अंतर्गत सिलिया 'गोदान', सकीना 'कर्मभूमि',कुलसूम 'रंगभूमि',जग्गो 'गबन' आदि को इस वर्ग में रखा जा सकता है।

उच्च वर्ग की नारियां सामान्यत: शिक्षित एवं धनाढ्य होती है। उन्हें जीवन यापन के लिए किसी पर आश्रित रहना नहीं होता है ।'प्रेम आश्रम' की गायत्री जमींदार परिवार की नारी है। पति की असामयिक मृत्यु के बाद वह उनकी संपत्ति की मालकिन बनती है। "वह गांव में जाकर लगान वसूल करती है। इलाके की उपज का ब्यौरा लेती है।"[6]

प्रेमचंद के समय मध्यवर्ग की नारियों को घर से बाहर जाकर पैसा कमाने की छूट नहीं थी। फिर भी प्रेमचंद गोदान में मालती नामक एक ऐसी पात्रा का सृजन किया है, जो पेशे से डॉक्टर है। वह न केवल स्वावलंबी है, बल्कि अपने अपाहिज पिता, माता एवं दो बहनों के भरण- पोषण एवं शिक्षा का भार भी उठाती है।

निम्न आय वर्ग की आत्मनिर्भर नारियों में 'गबन' की जग्गो सब्जी बेचकर ना केवल अपना घर चलाती है बल्कि गहने बनवाने एवं पहनने का शौक भी पूरा करती है। इसी प्रकार 'रंगभूमि' की कुल्सूम, 'कर्मभूमि' की सकीना, 'गोदान' की सिलिया आदि भी किसी पर आश्रित ना होकर स्वयं अर्थोपार्जन करती है और स्वाभिमान पूर्वक जीती है।

प्रेमचंद इस बात को अच्छी तरह समझते थे कि स्त्री-पुरुष संबंधों में आर्थिक पक्ष का विशेष महत्व है। वे अपने उपन्यासों में जहां उन्हें अवसर मिला, पाठकों का ध्यान आकृष्ट करते थे। 'प्रतिज्ञा' की सुमित्रा के यह पूछने पर कि "आखिर पुरुष अपनी पत्नी पर इतना रौब क्यों जमाता है।?"[7] पूर्णा सहज ढंग से उत्तर देती है " मर्द कमाकर खिलाता है।"[8] 'मंगलसूत्र' में संत कुमार पुष्पा से यही बात कहते हैं तो "जो स्त्री-पुरुष पर अवलंबित है उसे पुरुष की हुकूमत माननी पड़ेगी।"[9] इसके

उत्तर में पुष्पा पति से कहती है, "अगर मैं तुम्हारी आश्रिता हूं,तो तुम भी मेरे आश्रित हो ।मैं तुम्हारे घर में जितना काम करती हूं,इतना काम दूसरों के घर में करूं,तो अपना निर्वाह कर सकती हूं या नहीं बोलो? तब मैं जो कमाऊंगी वह मेरा होगा।"[10]

इस तरह 'प्रतिज्ञा' से लेकर 'मंगलसूत्र' तक आर्थिक संदर्भ में प्रेमचंद की नारी दृष्टि में उत्तरोत्तर विकास होता गया है। 'मंगलसूत्र' तक आते-आते प्रेमचंद के नारी पात्र अपने आर्थिक अधिकारों के प्रति अधिक सचेत, स्वयं को स्वावलंबी बनाने के लिए अधिक जागरूक, अपने स्वाभिमान की रक्षा के लिए अधिक सक्रिय नजर आते हैं।

संदर्भ ग्रंथ

1. प्रतिज्ञा, प्रेमचंद,पृ. 144
2. प्रेमचंद के पात्र, विजयदान देथा एवं कमल कोठारी,पृ.57
3. प्रतिज्ञा, प्रेमचंद, पृ.69
4. सेवासदन, प्रेमचंद, पृ.17
5. प्रेमचंद के उपन्यासों में नारी अस्मिता, डॉ चंद्रावती नागेश्वर,पृ.219
6. प्रेमाश्रम, पृ.133
7. प्रतिज्ञा, प्रेमचंद, पृ.91
8. वही, पृ.91
9. मंगलसूत्र,पृ.10
10. वही, पृ.56